1415/20

स्नातक, समाजशास्त्र (H)
(I) Paper-VI

From-
Dr Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College
SASARAM

Definition and Scope of Rural Sociology-
[ग्रामीण समाजशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषाएँ, विषय क्षेत्र]

आज अधिकांश विद्वान ग्रामीण समाजशास्त्र को समाजशास्त्र की एक प्रमुख शाखा मानते हैं। इसके नाम से ही स्पष्ट है, यह ग्रामीण समाज का अध्ययन या विज्ञान है। ए० आर देसाई - ने ग्रामीण समाजशास्त्र के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण समाज का विज्ञान है। सामान्य रूप से ग्रामीण समाज की संरचना तथा विकास के नियम किसी विशिष्ट ग्रामीण समाज का नियन्त्रण एवं संचालन करने वाले असाधारण नियमों को पता लगाने में सहायता प्रदान करते हैं। ग्रामीण समाजशास्त्र का मूलभूत कार्य ग्रामीण जीवन के विकास के नियमों का खोज करना है"

→ स्टूअर्ट चेपिन के अनुसार - ग्रामीण जीवन का समाजशास्त्र, ग्रामीण - जनसंख्या, ग्रामीण सामाजिक संगठन और ग्रामीण समाज में काम करने वाली सामाजिक प्रक्रियाओं का अध्ययन है"

→ टी० लिन० स्मिथ के अनुसार - कुछ अनुसंधानकर्ता उन सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करते हैं जो कि केवल ग्रामीण पर्यावरण अथवा किसी व्यवसाय में लगी व्यक्तियों में उपस्थित तक अधिकतर सीमित है, ग्रामीण सामाजिक सम्बन्धों के अध्ययन से मिले हुए इस प्रकार के तथ्य और सिद्धान्त ग्रामीण समाजशास्त्र कहे जा सकते हैं।

→ लारी नेल्सन के अनुसार- ग्रामीण समाजशास्त्र की विषय-वस्तु ग्रामीण पर्यावरण में उस विभिन्न प्रकार के प्रगति का वर्णन व विश्लेषण करना है जो कि उस पर्यावरण में विद्यमान है।

→ सिम्स- ग्रामीण समाजशास्त्र का क्षेत्र कृषि पर आश्रित अथवा इसमें जीविका-निर्वाह करने वाले मनुष्यों के संगठन का अध्ययन है।"

→ सैन्डरसन के अनुसार- ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण पर्यावरण में जीवन का समाजशास्त्र है"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि ग्रामीण समाजशास्त्र — ग्रामीण पर्यावरण से जुड़े हुए अनेक मामलों, समस्याओं, तथ्यों एवम् सामाजिक सम्बन्धों का विस्तृत अध्ययन करता है। एक विज्ञान के रूप में ग्रामीण समाजशास्त्र गाँव के विभिन्न संगठनों, संस्थाओं, प्रक्रियाओं, आर्थिक सामाजिक ढाँचे का अध्ययन करता है। जो - गाँव के विकास कार्यक्रम व गाँव की उन्नति के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

→ ग्रामीण समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र –

ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण समाज मे होने वाली घटनाओ का अध्ययन करता है। इसके विषय क्षेत्र के बारे में विभिन्न विद्वानो ने भिन्न - भिन्न विचार दिए है जहाँ विभिन्न विद्वानो के विचारो मे असहमतियाँ है वही ग्रामीण समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र के बारे मे कुछ आधारभूत बातो पर सहमति भी है।

प्रमुख असहमतियाँ (Main Disagreements)

(1) क्या समाजशास्त्र के सामान्य सिद्धान्तो एवं नियमो को ग्रामीण समाजशास्त्र के अध्ययनो मे लागू किया जाए अथवा – ग्रामीण समाजशास्त्र का अध्ययन भिन्न सिद्धान्तो एवम् नियमो द्वारा किया जाए.

(2) क्या ग्रामीण समाजशास्त्र अपने आपको केवल ग्रामीण समुदायो के अध्ययन तक ही सीमित रखे, अथवा नगरीय समुदायो का भी अध्ययन करके एक समग्र तुलनात्मक शास्त्र प्रस्तुत करे।

(3) क्या ग्रामीण समाजशास्त्र केवल ग्रामीण समुदायो के विकास के नियमो की ही खोज करे। अथवा उनमे परिवर्तन एवं सुधार हेतु व्यावहारिक अध्ययन भी करे।

→ एच.आर. देसाई जैसे कुछ विद्वानो ने एक नवीन विज्ञान की भाँति ग्रामीण-समाज शास्त्र को समाजशास्त्र की एक नवीन शाखा मानते हुए इसको केवल विकास एवं पुनर्निर्माण सम्बन्धी अध्ययनो तक ही सीमित रखा है।

→ प्रमुख सहमतियाँ – उपर्युक्त असहमतियो या मतभेदो एवं वाद - विवादो के बावजूद सभी विद्वान ग्रामीण समाज के विषय क्षेत्र के विषय मे सम्बन्धित निम्नलिखित बातो के बारे मे सहमत है।

(1) ग्रामीण तथा नगरीय पर्यावरण अनुपम तथा विशिष्ट विशेषताएँ रखते है दोनो के सामाजिक, आर्थिक एवम् सांस्कृतिक अलग-2 है। इसके आधार पर ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रो को एक-दूसरे से अलग अलग किया जा सकता है। इसलिए ग्रामीण समाज शास्त्र का विषय क्षेत्र नगरीय समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र से भिन्न है।

→ 3.

(2)→ यद्यपि ग्रामीण तथा नगरीय जीवन भिन्न है तथा इनमे अन्तर किया जा सकता है ~~भी~~ तथापि दोनो मे अनेक अन्तक्रियाएं पाई जाती है। इन अन्तक्रियाओ के कारण ही ग्रामीण समाजशास्त्र मे तुलनात्मक अध्ययनो की आवश्यकता है

(3)→ ग्रामीण समाजशास्त्र का मूल उद्देश्य सामाजिक संगठन, संरचना, प्रकार्य, विकास के वस्तुनिष्ठ प्रतिमानो आदि के बारे मे वैज्ञानिक क्रमबद्ध तथा विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना है ताकि इस ज्ञान के आधार पर विकास के नियमो का पता लगाया जा सके।

(4)→ ग्रामीण समाजशास्त्र का उद्देश्य यह पता लगाना भी है कि किसी प्रकार ग्रामीण संरचना परिवर्तित होती है तथा इसे परिवर्तित करने मे महत्वपूर्ण भूमिका किन कारणो की है

सभी समाजशास्त्री मानते है कि ग्रामीण समाजशास्त्र, ग्रामीण जनता के जीवन का विश्लेषण है। ग्रामीण समाजशास्त्र मे ग्रामीण समाज मे रहने वालो के सम्बन्धो तथा अन्तर्क्रियाओ का अध्ययन किया जाता है। इसप्रकार ग्रामीण समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र या अध्ययन क्षेत्र काफी व्यापक है।

Prem-
Dr. Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College
SASARAM-